IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रूप गोस्वामी के समसामयिक अन्य वैष्णव आचार्य सहित अनुयायी शिष्य परम्परा का अध्ययन।

डॉ0 चिन्मयी कुमारी

ग्राम–जानीडीह, पो0–घोघा, कहलगॉव भागलपुर बिहार।

संक्षिप्त शोध सार(Abstract)

प्रस्तुत आलेख का संबंध रूप गोस्वामी के सामसामयिक अन्य वैष्णव आचार्य एवं शिष्य परम्परा से है, जिसमें किसी विशिष्ट कालखण्ड में किसी सिद्धांत के परिवर्तन होने से जो अनुकूल अथवा प्रतिकुल परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है का वर्णन किया गया है तथा इस परिवर्तन से संबंधित व्यक्तियों/महापुरूषों/संतो/कवियों आदि के योगदान वर्णित हैं। समान विचारधाराओं के प्रकटीकरण करने वाले अनेक लोग उस मुख्य सिद्धांत के अनुयायी(followers) तो होते ही है, साथ ही उस मुख्य सिद्धांत के समर्थन में अपनी ओर से रचनात्मक भूमिका को उत्तरदायित्व के साथ निर्वहन करते हुए उसकी व्यापकता एवं लोकप्रियता उस परिवर्त्तन में सहायक होते हैं। इसी क्रम में उस महान् व्यक्तित्व की चर्चा करते हैं, वे हैं,– आचार्य रूप गोस्वामी। इनके द्वारा परिवर्तित भक्ति रस विषयक का ''अभिनव सिद्धांत'' अधिक व्यापक एवं लोकप्रिय हुआ। इन मूल सिद्धांत से जुड़े उस काल में अनेक ऐसे आचार्य हुए जिन्होंने अपने विचारो के माध्यम से उस विषय में उल्लेखनीय योगदान दिया। इस शोध पत्र में उन अनेक आचार्यो के योगदान का संक्षिप्त वर्णन करते हुए, आधुनिक भारतीय समाज के विकास में कहॉ तक सहायक है, वर्णन किया गया है।

विश्लेषण(Analysis) :– शोध कार्य के विश्लेषण के संदर्भ में जिन आचार्यो का योगदान उल्लेखनीय है, का वर्णन निम्नलिखित है–

(1) *सनातन गोस्वामी:–*

सनातन गोस्वामी रूप गोस्वामी के अग्रज थे तथा वे भी चैतन्यदेव के ही शिष्य थे। चैतन्यमत के भक्तों की चर्चा की व्यवस्थित करने तथा आगत भक्तों की अवस्था का उत्तरदायित्व सनातन गोस्वामी को ही वहन करना पड़ता था। इनकी रचनाओं का संबंध हरि भक्ति विलास और वैष्णव भक्ति से संबंधित है।

इनके रचनाओं का उपयोग आधुनिक समाज के विकास में सहायक है, क्योकि हरि भक्ति में आपसी प्रेम तथा वैष्णव भक्ति से भोजन में शाकाहारी पान का बोध होता है, जिसका अनुकरण समाज एवं दोनों के लिए लाभकारी हो सकता है।

(2) *जीव गोस्वामी* :– जीव गोस्वामी रूप गोस्वामी के अनुज वल्लभ पुत्र थे, जिनका जन्म बंगाल में हुआ था, काल 1435/1445 शाके माना जाता है। इन्होंने अपना पुरा जीवन कृष्ण भक्ति और उनसे संबंधित रचनाओं में लगाया। इनकी प्रमुख रचनाओं में गोविन्द ''विरूदा बलि'' और ''गोपा चलम्पू'' है। इन्होंने चैतन्य के सिद्धांत को नये सरल तरीके से प्रस्तुत किया जिसने हमारे भारतीय समाज को सुसभ्य एवं सुसंस्कृत बनाने में काफी सहायक रहा है।

(3) *कवि कर्णपुर* :– ये रूप गोस्वामी के समकालीन तथा चैतन्यदेव के प्रमुख अनुयायियों मे से एक थे, जिनका पुरा नाम परमानंद सेन और उपनाम कवि कर्ण पुर था। इन्होंने ''चैतन्य चंद्रोदय'' नामक नाटक की रचना की थी, जिसमें चैतन्य के जीवन दर्शन से होने वाले सामाजिक और धार्मिक विकास का वर्णन किया गया है, जिसका मंच समाज को आगे बढ़ाने एक नयी दिशा प्रदान करती है।

(4) *कविचन्द्र* :– ये कवि कर्णपुर के पुत्र थे, इन्होंने ''काव्य चंद्रिका'' अलंकार शास्त्रीय ग्रंथ की रचना की, जो छः अध्यायों में लिखित है। इसकी रचना आधुनिक साहित्य के विकास एवं अन्य रचनाओं हेतु काफी उपयोगी है तथा इससे एक नये दर्शन प्राप्त होते हैं।

(5) *विश्वनाथ चक्रवर्ती भट्टाचार्य* :– चैतन्य सम्प्रदाय के साहित्य को बोधगम्य बनाने वाले विद्वानों में विश्वनाथ चक्रवर्ती का अतिशय महत्त्व है। उस काल के वे प्रमुख टीकाकार थे। उन्होंने अपने छोटे–छोटे टीकाओं एवं ग्रंथों की सहायता से वैष्णव सिद्धांतो को हृदयगामी बनाया है। इनके एक प्रमुख पद इस प्रकार हैः–

आश्विने शुक्ल पंचम्यां वसुचन्द कालामिते।
शाके वृन्दावने पूर्णा भवदानचन्द्र चन्द्रिका।।

उपयुक्त पद से प्रतीत होता है कि इस टीका का इन्होंने शाके 1618 तदनुसार 1706 ई0 में अश्विन शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि को वृंदावन में पूर्णतः प्रदान की थी। उपयुक्त उद्धरण के आधार पर इनका स्थितिकाल ईसा के 17वें शतक का अंतिम चरण तथा 18 वीं शतक के प्रारंभ मानना युक्ति संगत है। इनकी रचनाओं की सरलता आधुनिक संस्कृत साहित्य विकसित होने काफी सहायक रहा है।

निष्कर्ष(Conclusion)

उपरोक्त विश्लेषण से पता चलता है कि रूपगोस्वामी के समसामयिक कतिपय प्रमुख आचार्यो का अति संक्षिप्त प्रस्तुत विवरण आधुनिक साहित्य विशेषकर संस्कृत साहित्य के विकास के साथ वैष्णव सिद्धांत के प्रचार–प्रसार तथा विकास में एक नये सरल और सुगम विचारधारा का प्रादुर्भाव किया। जिसके प्रभाव के कारण आज भी हमारा भारतीय समाज वैष्णव धर्म के प्रति काफी संवेदनशील और जागरूक है तथा इसे बनाये रखने के लिए प्रतिबद्ध है। अतः कहा जा सकता है कि उपरोक्त वर्णित आलेख हमारे भारतीय संस्कृति को बराबर एवं विकसित होने में काफी सहायक है।

संदर्भ(References)

(1) उज्जवलनील मणिः– रूप गोस्वामी, चौ0 प्रकाशन, वाराणसी।

(2) उज्जवलनील मणिः– रूप गोस्वामी सम्पादक श्यामनारायण पाण्डेय प्रकाशक ग्रंथ, रामबाग कानपुर।

(3) चैतन्य चरित्रम्ः– गीता प्रेस, गोरखपुर।

(4) हरिभक्ति रसामृत सिन्धुः– रूप गोस्वामी, अच्युत ग्रंथमाला कार्यालय, वाराणसी।

(5) दान केलि कौमुदीः– रूप गोस्वामी, गीता प्रेस गोरखपुर।

(6) अलंकार कौस्तुभः– कविकर्णपुर, चौ0 प्रकाशन, वाराणसी।

(7) गोविन्द विरूदावलिः– जीव गोस्वामी, ग्रंथालय, वाराणसी।

(8) सनातन गोस्वामीः– हरिभक्ति गीताप्रेस, गोरखपुर।